उत्तर प्रदेश जीके स्पेशल उत्तर प्रदेश की मिट्टीया

भाग - 3

By - Rahul Vaibhav

FOR PDF SEARCH ON GOOGLE - SCIENCE KA MAHAKUMBH

यह यूपी जीके स्पेशल का भाग- 3 है। इसमें कराए गए प्रश्न यूपी में होने वाली सभी परीक्षाओं (UPSSSC, UPPOLICE, UPPSC, RO/ARO etc) में काम आयेंगे। आप सभी 1-1 करके सभी भाग का अध्ययन करे और ज्यादा से ज्यादा विद्यार्थियों को शेयर करे.

RAHUL VAIBHAV SIR NOTES

उत्तर प्रदेश की मिट्टियाँ

★ **भाँभर एवं तराई क्षेत्र की मिट्टियाँ ⇒** ये मिट्टियाँ 3 प्रकार की होती हैं।

1. दलदली 2. नम 3. उपजाऊ।

दलदली ⇒ दल-दल ऐसी आर्द्र भूमि होती है। जिसमें वृक्ष-क्षुप और अन्य कोष्णीय पौधे उग रहे हो दलदली भूमि कहलाती है।

नम – वह निम्न क्षेत्र जहाँ भूमि पूरी तरह पानी से भीगी हो, जहां भरपूर नमी पायी जाती हो।

उपजाऊ – तराई क्षेत्रों में जो मृदा पायी जाती है ये काफी उपजाऊ होती है।
जैसे ⇒ सहारनपुर, पीलीभीत, गोण्डा, बस्ती, सीतापुर ये सभी जिले उपजाऊ मिट्टी में आते हैं।

★ उ० प्र० को जलोढ़ मृदा में रखा गया है।

RAHUL VAIBHAV SIR NOTES

PAGE NO.
DATE: / /

★ भाभर एवं तराई क्षेत्र की मिट्टियां ⇒

प्रदेश के उत्तरी अर्थात भवँर क्षेत्र हिमालयी नदियो के भारी निक्षेपो से निर्मित होने के कारण यहाँ कि मिट्टी कंकड़ो पत्थरो तथा मोटे बलुओ से निर्मित है। जो कि काफी हिद्दली है। अतः जल नीचे चला जाता है। इस क्षेत्र में कृषि कार्य असम्भव है। यहा ज्यादातर झाड़िया या वन पाये जाते है। इस मृदा मे गन्ना, धान की पैदावर अच्छी होती है।

★ मध्य मैदानी क्षेत्र की मिट्टियां ⇒

मध्य भाग मे स्थिति विशाल गंगा - यमुना मैदान प्लीस्टोसीन युग से आज तक विभिन्न नदियो के निक्षेपो से निर्मित है। इस मैदान में पायी जाने वाली मृदा को जलोढ़ या भाट मृदा बहुरी बहुत गहरी है। इसमे पोटाश एंव चुना प्रचुर मात्रा मे मिलता है। जब कि फास्फोरस, नाइट्रोजन, जीवांश का आभाव है। इसकी मृदा - खादर या नवीन जलोढ़ मृदा तथा बांगर या पुरानी जलोढ़ मृदा और भूड़ तथा कही मृदाये पायी जाती है।

(1) **खादर मृदा ⇒** जो मृदा नदियो द्वारा प्रत्येक बाढ़ के साथ परिवर्तित होती रहती है। उसे खादर या जलोढ़ मृदा कहते है। यह मृदा हल्के भूरे रंग की, छिद्र युक्त महीन कणो वाली और, इसमे चुना, पोटाश, मेग्नीशियम तथा जैव तत्वो की मात्रा अधिक होती है। इसे बलुआ, सिल्ट दोमट आदि नामो से जाना जाता है।

बांगर मृदा ⇒ गंगा, यमुना मैदानी क्षेत्र का वह भाग है। जहां नदियो के बाढ़ का जल नही पहुच पाता है।

PAGE NO.
DATE: / /

वहाँ की मृदा को बांगर या पुरानी जलोढ़ मृदा कहा जाता है। इसे दोमट, मटियार, आदि नामो से जाना जाता है। निरंतर कृषि उपयोग में आने के कारण इसकी उर्वरा शक्ति क्षीण हो गई है। और खाद देने की आवश्यकता होती है।

लवणीय तथा क्षारीय मृदा प्रदेश के बांगर मृदा वाले क्षेत्र में भूमि के समतल होने और जल निकासी का उचित प्रबन्ध न होने, नहरो से सिंचाई किये जाने, 10% भूमि ऊसर हो चुकी है। जो कि प्रदेश के अलीगढ़, मैनपुरी, कानपुर, उन्नाव, रायबरेली, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, जौनपुर, इलाहाबाद आदि। जिलो मे पायी जाती है। इसे बंजर नाम से भी जाना जाता है।

मरुस्थलीय मृदा → उत्तर प्रदेश के कुछ पश्चिमी जिले मथुरा, आगरा, अलीगढ़ में यह मृदा पायी जाती है। शुष्कता व भीषण ताप के कारण चट्टाने विखण्डित होकर बालू के कणों में परिणत हो जाती है। लवण व फास्फोरस की मात्राए अधिक पायी जाती है।

काली मृदा → प्रदेश के पश्चिमी जिलो तथा बुंदेलखण्ड क्षेत्र में छिट-2 काली मिट्टी पायी जाती है।

लाल मृदा → यह मृदा दीक्षणी. अलाहाबाद (प्रयागराज) झांसी मिर्जापुर, सोनभद्र, चंदौली जिलो में पायी जाती है।

द. के पठारी- **पठारी क्षेत्र की मृदाएं →** प्र. के द. भाग में प्री कैम्ब्रियन युग की चट्टानो का बाहुल्य क्षेत्र है। इस क्षेत्र में ललितपुर, झांसी, जालौन, हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट,

RAHUL VAIBHAV SIR NOTES

सोनभद्र और चंदेली आदि जिले सम्मिलित है। यहां कई प्रकार की मृदाएं पायी जाती है। लाल मिट्टी, परवा, मार, (मांड़) राकट, भींटा आदि।

मृदा अपरदन

★ जल और वायु के साथ मृदा के कटने-बहने अथवा उड़ने की क्रिया को मृदा अपरदन कहा जाता है। मृदा अपरदन आज हमारी कृषि भूमि के लिए सबसे भयानक खतरा है। 2 प्रमुख कारण = जलीय अपरदन, तथा वायु अपरदन होते है। UP मे जलीय अपरदन का अधिक प्रभाव है।

जलीय अपरदन

★ भूमि पर वनस्पतियो का आभाव, ढालदार स्थानो पर खेती करना, अनियंत्रित वर्षा या बाढ़ के समय खेतो को खाली रखना, वनो की अनियंत्रित कटाई से आदि जलीय अपरदन तीव्र गति से होता है। इसके कई रूप है। परत अपरदन, क्षुद्र अपरदन, अवनालिका क्षरण, सरिता तट क्षरण आदि।

वायु अपरदन

प्रदेश में वायु अपरदन गर्मी के महीनो में अधिक होता है। जिससे दक्षिण-पश्चिमी उत्तर प्रदेश के 3200 एकड़ कृषि योग्य भूमि का प्रतिवर्ष विनाश हो रहा है। प्रदेश के आगरा, मथुरा, इटावा आदि जिले इससे ज्यादा प्रभावित है।

RAHUL VAIBHAV SIR NOTES

RAHUL VAIBHAV SIR NOTES

★ गंगा-यमुना मैदान में मुख्यतः पायी जाती है ⇒ जलोढ़ मृदा।

★ नवीन व प्राचीन जलोढ़ मृदा को जाना जाता है ⇒ खादर व बांगर नाम से।

★ जलोढ़ मृदा का निर्माण हुआ है ⇒ कांप, कीचड़ व बालू से।

★ रेगुर, केरल व कपास मृदा के नाम से जाना जाता है ⇒ काली मिट्टी

★ प्रदेश में सबसे अधिक मृदा अपरदन होता है ⇒ जल से।

★ जलोढ़ मृदा में पोटाश एवं चूना की अधिकता होती है। लेकिन कमी होती है ⇒ फास्फोरस, नाइट्रोजन, जैव तत्वों की।

Q-1 लाल मिट्टी पायी जाती है। ⇒ मिर्जापुर, झाँसी।

Q-2 प्रदेश में अवनालिका अपरदन से सबसे अधिक प्रभावित जिला ⇒ इटावा

Q-3 प्रदेश में वायु मृदा अपरदन से सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र ⇒ पश्चिमी क्षेत्र

Q-4 प्रदेश में कुल मृदा समूह क्षेत्र है = 8

Q-5 प्लीस्टोसीन युग से आज तक नदियों के निक्षेपों से बना है। - गंगा-यमुना मैदान।

Q-6 गंगा यमुना मैदान में कौन सी मृदा पायी जाती है ⇒ जलोढ़ मिट्टी।

Q-7 स्थानीय भाषा में नवीन जलोढ़ मिट्टी, बलुआ, मटियार आदि नामों से जानी जाती है। ⇒ खादर।

Q-8 लाल मृदा, परवा, मार, राकर, भौंटा आदि मिट्टियाँ पायी जाती हैं ⇒ बुंदेलखण्ड।

RAHUL VAIBHAV SIR NOTES